मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2021 marumegh
ISSN:2456-2904

खरीफ दालें

रूमाना खान[1], विजय शर्मा[2], विवेक[3] एवं अनु[3]
[1] अनुवांशिक एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, झांसी
[2] अनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा
[3] अनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

उन्नत किस्में एवं उनकी विशेषताएं

मूंग

के–851 (1982) : यह जायद एवं खरीफ दोनों मौसम में बुवाई के लिए उपयुक्त है। 60–80 दिन में पकती है। यह किस्म शुष्क खेती एवं असिंचित क्षेत्रों के लिए भी उपयुक्त है। इसकी उपज 7–8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

एस.एम.एल.–668 (2004) : यह किस्म लगभग 60–63 दिन में पक कर 8 से 10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज देती है। इसका दाना मोटा होता है तथा यह किस्म पीतशिरा मोजेक रोग के प्रति प्रतिरोधक पायी गयी है।

पूसा विशाल (2001) : 59–61 दिन में पकने वाली यह किस्म 8 से 10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज देती है तथा पीतशिरा मोजेक रोग के प्रति प्रतिरोधक पायी गयी है।

जीएम–4 (2001) : यह एक अधिक पैदावार देने वाली किस्म है। यह पीतशिरा रोग के प्रति आंशिक प्रतिरोधी पायी गयी है। इसकी उपज 9 से 10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त हो जाती है।

उड़द

टी–9 (1982) : मध्यम कद के पौधों वाली इस किस्म का दाना छोटा काले रंग का होता है। यह किस्म 80–90 दिन में पककर 8–10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज देती है।

पी.यू.–31 (2008) : मध्यम आकार के दानों वाली यह किस्म 70–80 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की उपज 10 से 12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

प्रताप उड़द–1 (के.पी.यू. 07–08) (2013) : अर्द्ध–फैलाव युक्त एवं परिसीमित वृद्धि, अण्डाकारयुक्त पत्तियों के किनारे रोयेदार, लम्बी फलियां, प्रति फली 6–9 बीज तथा इसके 100 दानों का भार 4–5 ग्राम होती है। मध्यम समकालिक परिपक्वता (72–78 दिन) की यह किस्म 9–10 क्विं./हे. उपज देती है। यह किस्म तना व सफेद मक्खी कीट एवं पीतशिरा, पत्ती मोड़क विषाणु रोग, जालीनुमा झुलसा व छाछ्या रोग के प्रति सहनशील तथा जीवाणु पत्ती धब्बा एवं एन्थ्रेकनोज से प्रतिरोधी पायी गयी है।

आजाद उड़द–3 (के.यू. 96–3) (2003) : यह छोटे कद की लगभग 70 दिन में पककर तैयार होने वाली किस्म है। इसका दाना छोटा तथा काला होता है। जिसकी 8–10 क्विं./हे. तक उपज प्राप्त होती है। यह पीतशिरा मोजेक रोग अवरोधी किस्म है।

चंवला

आर.सी.–19 (1993) : इस किस्म के पौधे मध्यम लम्बे, सीधे और चौड़ी पत्तियों वाले होते हैं। फूल नीले तथा फलियां मध्यम लम्बी होती हैं। 80 से 85 दिन में पककर तैयार होने वाली इस किस्म का दाना लाल झांई लिए हुए भूरे रंग का होता है। दाने तथा हरे चारे दोनों के लिए उपयुक्त इस किस्म की उपज 6 से 8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

आर.सी.–101 (2001) : लगभग 65–70 दिन में पकने वाली इस किस्म में फूल 40 दिन में आते हैं। इस किस्म की औसत उपज 8–9 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। मध्यम लम्बाई की मोटी फलियों में सफेद बीज बनते हैं। इस किस्म के 100 बीजों का भाग लगभग 11 ग्राम होता है। यह किस्म कीट प्रकोप के प्रति कम ग्राह्य है।

खेत एवं उसकी तैयारी

वर्षा होने पर शुद्ध फसल हेतु भूमि की 1–2 बार जुताई कर खेत तैयार करें। दाल वाली सभी फसलों के लिए उचित जल निकास वाले खेतों का चयन करें।

खाद एवं उर्वरक

मूंग, उड़द व चंवला के लिए प्रति हेक्टेयर 30–40 किलो फॉस्फेट व 15–20 किलो नत्रजन बुवाई के समय नायले में बीज से नीचे ऊर देवें। मिट्टी की जांच के आधार पर पोटाश देवें।

दलहनी फसलों में प्रोटीन की मात्रा बढ़ाने हेतु मृदा जांच के आधार पर बुवाई से पहले आवश्यकतानुसार कैल्शियम व गंधक युक्त उर्वरकों का उपयोग करें। बुवाई से पहले 250 कि.ग्रा. जिप्सम या 40 कि.ग्रा. गंधक प्रति हेक्टेयर उपयोग में लेवें। पत्तियों में पीलापन होने पर फूल आने से पहले 0.1 प्रतिशत गंधक अम्ल के घोल का छिड़काव करें।

बीज दर, बीज उपचार एवं बुवाई

15–20 किलो बीज प्रति हेक्टेयर की दर से काम में लेवें। बुवाई मानसून की वर्षा होने के साथ–साथ करें। वर्षा देरी से हो तो 30 जुलाई तक बुवाई इन फसलों की खेती की जा सकती है। मिश्रित फसल के लिए 5 से 7 किलो बीज प्रति हेक्टेयर काम में लेवें। कतार से कतार की दूरी 30 से.मी. और पौधे से पौधे की दूरी 10 से.मी. रखी जायें। बुवाई से पहले प्रति किलो बीज को 3 ग्राम थाइरम 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. अथवा 2 ग्राम कैप्टॉन 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. अथवा 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत की दर से उपचारित करें।

राइजोबियम एवं पी.एस.बी. कल्चर से उपचार

कल्चर से बीजोपचार पुस्तिका के अंत में दिये गए विवरण के अनुसार अपनाएं।

निराई–गुड़ाई

आवश्यकतानुसार खरपतवार निकालते रहें। 30 दिन की फसल होने तक निराई–गुड़ाई कर देनी चाहिए।

उड़द में रसायनिक खरपतवार नियंत्रण हेतु अंकुरण से पूर्व 1 लीटर पेन्डेमिथेलिन 500 लीटर पानी में प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। खड़ी फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए बुवाई के 15–20 दिन के अन्दर क्यूजोलोफॉप 50 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

फसल संरक्षण

मोयला, हरा तेला व सफेद मक्खी : मैलाथियॉन 50 ई.सी. या डायमिथोएट 30 ई.सी. एक लीटर या मैलाथियान 5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलो प्रति हेक्टेयर की दर प्रयोग करें।

पत्ती खाने वाले कीट : इन कीटों का प्रकोप होने पर 125 ग्राम ईमामेक्टीन बेन्जोएट 5 एस.जी. या 250–300 मिली इण्डोक्साकार्ब 15.8 ई.सी. या 1 लीटर प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

फली छेदक : मोनोक्रोटोफॉस 36 डब्ल्यू.एस.सी. या क्यूनॉलफॉस 25 ई.सी. एक लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से फूल व फली आते ही छिड़कें। आवश्यकता हो तो छिड़काव दोहरावें।

जीवाणु अंगमारी रोग : खरीफ में मूंग तथा चंवला में यह रोग जेन्थोमोनास जीवाणु द्वारा फैलता है। इस रोग में छोटे गहरे भूरे रंग के धब्बे पत्तों पर तथा प्रकोप बढ़ने पर फलियों और तने पर भी दिखाई देते हैं। इससे पौधे मुरझा जाते हैं।

इस रोग के दिखाई देते ही 1 ग्राम स्ट्रेप्टोमाइसिन 25 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड प्रति 10 लीटर पानी के साथ के घोल का छिड़काव करें।

पीतशिरा मोजेक (विषाणु) रोग : इस रोग की रोकथाम के लिए रोग का प्रकोप दिखाई देते ही डायमिथोएट 30 ई.सी. एक लीटर का प्रति हेक्टेयर की दर से या इमिडाक्लोप्रिड 5 मि.ली. 15 लीटर पानी में घोलकर छिड़कें। आवश्यकता हो तो 15 दिन के अंतर पर फिर छिड़काव करें।

विषाणु वाहक सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु खड़ी फसल में पिला चिपचिपा पाश (yellow sticky trap) 12-15 नंग प्रति हेक्टेयर खड़े करें।

छाछ्या (पाउडरी मिल्ड्यू) रोग : इसमें पत्तियों की ऊपरी सतह पर शुरू में सफेद गोलाकार पाउडर जैसे धब्बे हो जाते हैं तथा बाद में पाउडर सारे तने तथा पत्तियों पर फैल जाता है। पत्तियां छोटी रहकर पीली

पड़ जाती है। रोकथाम हेतु प्रति हेक्टेयर ढाई किलो घुलनशील गंधक अथवा केराथेन एक मिली लीटर/लीटर पानी के घोल का पहला छिड़काव रोग के लक्षण दिखाई देते ही एवं दूसरा छिड़काव 10 के अंतराल पर कीजिए।

उड़द की फसल में छाछ्या रोग नियंत्रण हेतु रोग के लक्षण दिखते ही एजाक्सिट्रोबिन 23 प्रतिशत एस. सी. 0.5 मिली/लीटर पानी या टेबुकोनाझोल 50 प्रतिशत व ट्रायफ्लाक्सिसट्रोबिन 25 प्रतिशत डब्ल्यू.जी. 1 ग्राम/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार छिड़काव दोहरावें।

पीलिया रोग : फसल में पीलापन दिखाई देते ही 0.1 प्रतिशत गंधक के तेजाब का या 0.5 प्रतिशत फेरस सल्फेट का छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार यह छिड़काव दोहरायें।

फसल की कटाई और पैदावार

फलियों के झड़कर गिरने से होने वाली हानि को रोकने के लिए फलियों को पूरी तरह पकने के बाद एवं झड़ने से पहले काट लेवें। इसके बाद एक सप्ताह या दस दिन तक सुखायें और फिर गहाई कर दाना निकाल लेवें।